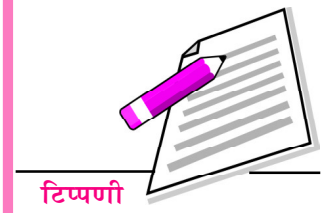

टिप्पणी

8

मुगल साम्राज्य का उत्थान व पतन

आप पिछले पाठ में पढ़ चुके हैं कि बाबर ने उत्तर भारत के मुख्य भागों पर कब्जा करके मुगल साम्राज्य की नींव रखी थी। वह एक कुशल सेना नायक था जिसने नवाचार के तरीके अपनाकर तथा बारूद के प्रयोग से अपनी सेना को अजेय बना लिया था। भारत में सेना को लड़ने के लिए नए वातावरण के अनुकूल बनना था जिसमें पहाड़, जंगल, दलदल और निर्मित क्षेत्र था। अत: सेना के लिए नए तरीकों और विविधता के साथ नई सोच की जरूरत थी। मुगलों ने आसानी से तालमेल बैठा लिया और भारत में स्थापित अपने नए शासन की रक्षा के लिए तैयार थे।

बाबर के उत्तराधिकारी हुमांयू, अकबर, शाहजहां, औरंगजेब ने न केवल अपने साम्राज्य को मजबूत किया बल्कि अपने साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार भी किया उनके पास, असाधारण सैन्य तथा प्रशासकीय कौशल था। इस पाठ में हम भारत में मुगल शासन के बारे में और अधिक जानेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप:-

- अकबर के शासन में मनसबदारी व्यवस्था को स्पष्ट कर सकेंगे;
- पानीपत के द्वितीय युद्ध की व्याख्या कर पाएंगें;
- हल्दी घाटी के युद्ध में अकबर की सेना के अनुभव को उजागर कर पाएंगें;
- मुगलों के पतन के कारण जान सकेंगे।

8.1 मनसबदारी व्यवस्था

मनसबदारी व्यवस्था की शुरूआत अकबर ने सैन्य प्रशासन को मजबूत बनाने के लिए की थीं। अकबर ने यह व्यवस्था मध्य एशिया से ली थी और इसमें मुस्लिम, राजपूत तथा अफगानों को शामिल किया। यह व्यवस्था मुगल सेना व प्रशासन के लिए महत्वपूर्ण थी। इस व्यवस्था में एक आम सैनिक के ऊपर का प्रत्येक अधिकारी मनसब बन गया था।

टिप्पणी

मनसब दीवानी तथा सैन्य दोनों मामलों को देखते थे तथा इनका स्थानांतरण एक विभाग से दूसरे विभाग में हो सकता था। दूसरे शब्दों में यह सेना के अंतर्गत एक पद अथवा हैसियत थी।

मनसब्दारी विरासत में नहीं मिलती थी। मुगल अधिकारी (चाहे वह हिन्दू हो या मुस्लिम) को कार्य करने के बदले विभिन्न क्षेत्रों में नेतृत्व दिया जाता था। हर अधिकार को सेना में कुछ सशस्त्र सैनिक, सेना, घुड़सवार तथा हाथी लेकर आने होते थे। इसी आधार पर उनका मूल्यांकन किया जाता था।

क्या आप जानते हैं?

मनसबदारी सैन्य प्रशासन की व्यवस्था थी जिसे सर्वप्रथम अकबर ने 1571 ई. में शुरु किया था। वह अपनी सेना में हिन्दू व मुस्लिमों को शामिल करना चाहता था। वह उनके द्वारा लाए गए हथियारबंद लोगों के आधार पर उपहार व पद देता था।

सबसे ऊंचा मनसब (जो शासक वर्ग का न हो) अधिकतम 7000 सैनिकों का सेनानायक हो सकता है। कहीं-कहीं यह आंकड़ा 8000 या 9000 सैनिक का भी है। एक राजकुमार की मनसब लगभग 7000 से 50,000 या इससे अधिक हो सकती थी। आइन-ऐ-अकबरी में 66 पदक्रम उल्लेखित हैं जो 10,000 सैनिकों से शुरु होकर 10 सैनिकों तक के लिए है।

मनसब के अलावा कार्यकारी अधिकारी निम्न तीन श्रेणी में विभाजित थे:

(i.) मनसबदार - 20 से 400 तक के पदक्रम अधिकारी।

(ii.) अमीर / उमरा - 500 से 2500 तक के अधिकारी।

(iii.) अमीर-ए-आज़म - 3000 से 7000 तक के उच्च अधिकारी।

सभी मनसबदारों को दो भागों में बांटा जाता था:

(i.) हाजिर-ए-रिकाब - वे जो दरबार में रहते थे।

(ii.) तैनात - जो अन्य क्षेत्र में तैनात होते थे।

वेतन के दो स्वरूप थे- पहला नकद तथा दूसरा जागीर के रूप में कर प्राप्ति। यह जागीर गांव या गावों का समूह हो सकता था।

जुर्मानों के निम्न प्रकार थे-

- तफावत-ए-अशप - घोड़ों में हुई कमी पर
- तफावत-ए-सिलाह - उपकरण की कमियों पर
- तफावत-ए-तबिनान - सैनिकों की कमी पर

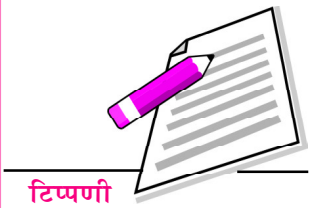

अन्य कारण जिनसे वेतन तथा भत्ते प्रभावित होते थे-

- बिना छुट्टी गैर-हाजिर होना
- बीमारी
- रूखसत
- फरारी
- बरतर्फी (त्यागपत्र)
- पेंशन
- फौती (मृत्यु)

मुगलों ने उपाधि प्रदान करने और सम्मानित करने के अनेक तरीके अपनाए थे-

- खिताब देना
- सम्मान का अंगवस्त्र देना
- धन या अन्य वस्तु उपहार में देना
- नगाड़ा बजवाना
- मानक तथा पताका देना

8.2 पानीपत का द्वितीय युद्ध

पानीपत के द्वितीय युद्ध से अकबर के शासनकाल की शुरूआत मानी जाती है। साथ ही यह युद्ध अकबर द्वारा अपने राज्य का विस्तार करने के लिए भी जाना जाता है। यह युद्ध 5 नवम्बर 1556 को हेमचन्द्र विक्रमादित्य (हेमू) तथा अकबर की सेना के मध्य हुआ था। इस समय मुगल शासन केवल पंजाब, दिल्ली व अफगान तक ही सीमित था। पानीपत के द्वितीय युद्ध के बाद मुगल साम्राज्य का विस्तार सभी दिशाओं में हुआ। इस युद्ध में हेमू की सेना अकबर की सेना की तुलना में विशाल व बड़ी थी।

(क) हेमू, सूरी वंश के शासक आदिल शाह सूरी का प्रधानमंत्री था। हेमू हेमचन्द्र विक्रमादित्य के नाम से भी जाना जाता था। पानीपत के द्वितीय युद्ध के एक माह पहले, हेमू ने दिल्ली के युद्ध में अकबर की सेना को हराया था। दिल्ली का युद्ध 7 अक्टूबर 1556 को हुआ था। तत्पश्चात् वह सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य के नाम से गद्दी पर बैठा। एक माह बाद नवम्बर 1556 को अकबर ने हेमू को पानीपत के द्वितीय युद्ध में हराकर दिल्ली की गद्दी वापिस प्राप्त कर ली।

(ख) इस युद्ध में मुगल सेना पानीपत में 30 वर्ष बाद अकबर के नेतृत्व में एक बार फिर एकत्रित हुई। 30 वर्ष पहले बाबर ने इब्राहिम लोधी को पानीपत के प्रथम युद्ध में हराया था। पानीपत के द्वितीय युद्ध में अकबर की सेना का नेतृत्व अली कुली खान शैबानी

टिप्पणी

कर रहे थे। इस सेना में हाथी व घुड़सवार सैनिक थे जिन्होंने हेमू की सेना की सैन्य तकनीक को ध्वस्त कर दिया।

यद्यपि हेमू मुगलों से हार गया किन्तु सैन्य बल में वह अकबर से कहीं आगे था। हेमू की सेना में 30,000 घुड़सवार व 500 हाथी सवार थे। हेमू स्वयं हाथी सवार था। हेमू ने हवाई नाम के हाथी पर बैठकर सेना का नेतृत्व किया था। मुगलों ने हेमू की सेना की घेराबंदी कर दी। 10,000 घुड़सवारों की मुगल सेना के साथ अकबर व बैरम खान 8 मील दूर युद्ध स्थल से पीछे खदेड़े थे। इस युद्ध ने यह सिद्ध किया कि केवल संख्या बल पर युद्ध नहीं जीते जाते; उसमें सैन्य तकनीक का भी योगदान जरूरी होता है।

युद्ध के परिणाम

युद्ध में हेमू को तीर लगा था और उसे बंदी बनाया गया। बैरम खान ने हेमू का सिर धड़ से अलग किया। इस युद्ध में विजय के उपरांत मुगलों ने दिल्ली व आगरा पर कब्जा कर लिया तथा अकबर की संप्रभुता स्थापित कर दी।

? क्या आप जानते हैं?

सोवर्नियटी (संप्रभुता) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Superanus' शब्द से हुई थी जिसका अर्थ है प्रभुत्व स्थापित करना। इसका अर्थ हुआ संप्रभुता अर्थात् शासन करने की प्रभुता।

पाठगत प्रश्न 8.1

1. मनसबदारो को कैसे सम्मान दिया जाता था?
2. पानीपत का द्वितीय युद्ध कब हुआ?
3. पानीपत के युद्ध में आमने-सामने की सेनाएं कौन थीं?

8.3 हल्दी घाटी का युद्ध

जून 1576 में अकबर के शासनकाल में हल्दी घाटी का दूसरा ऐतिहासिक युद्ध हुआ। यह मेवाड़, राजस्थान के शासक महाराणा प्रताप सिंह और आमेर के राजा मान सिंह के मध्य हुआ था। राजा मान सिंह अकबर का कुशल सेनानायक था। पानीपत के द्वितीय युद्ध के पश्चात् सभी राजपूत राजा अकबर के अधीन आ गए किन्तु मेवाड़ के राणा उदय सिंह ने अकबर की संप्रभुता मानने से इंकार कर दिया। उन्होंने अपनी राजधानी तथा चित्तौड़ का किला अकबर से बचाने की ठानी। अकबर ने 40,000 सैनिकों की सेना (जिन्हें बंदूक तथा मस्कट दिए गए थे) के साथ चित्तौड़ पर आक्रमण किया। इसका सामना 8000 बहादुर राजपूत सैनिकों ने हथियारों की कमी के बावजूद वीरता से किया।

टिप्पणी

इस किले में आम नागरिकों की संख्या भी बहुत अधिक थी। इस किले में अंतिम व्यक्ति अपने प्राण त्यागने तक लड़ा। वहीं सभी महिलाओं ने सामूहिक जौहर किया। चित्तौड़ के पतन के साथ मेवाड़ का एक बड़ा उपजाऊ हिस्सा मुगलों के अधीन आ गया। इससे धन की हानि हुई तथा संसाधन घट गए और सैनिकों का मनोबल टूट गया। परंतु मेवाड़ के उत्तराधिकारी राणा प्रताप सिंह ने मुगलों के साथ हल्दीघाटी में दोबारा युद्ध किया।

(क) महाराणा प्रताप सिंह का जन्म 1540 में हुआ था वह एक कुशल घुड़सवार व चतुर तलवार बाज थे। वह 1572 में मेवाड़ के शासक बने परंतु वह अकेले अकबर का मुकाबला करने में सक्षम नहीं थे। अकबर ने राणा प्रताप को अपने दरबार में नियुक्ति देने का भी प्रस्ताव रखा किन्तु महाराणा नहीं माने। अकबर के समस्त दांव उन्हें नहीं मना सके। इसलिए अकबर ने राणा प्रताप को हराने का फैसला किया। राणा प्रताप और अकबर के युद्ध के परिप्रेक्ष्य में नीचे कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु हैं-

- मुगलों से युद्ध करने के लिए राणा प्रताप सिंह ने स्वयं को तैयार किया। उन्होंने पश्चिमी पहाड़ी इलाके को चुना तथा कुभंलगढ़ के महल को अपनी राजधानी बनाया। उसने उदयपुर के उत्तर पश्चिम में गोगुंदा किले को मजबूत किया और अपनी सरकार स्थापित की तथा मुगलों के विरूद्ध युद्ध का बिगुल बजाया।
- प्रताप ने अपने राज्य के हर गांव का दौरा किया तथा लोगों को एकता और त्याग के लिए तैयार किया। उन्होंने मुगलों के खतरों के विरुद्ध लोगों को एकजुट किया। प्रताप के अनुसार युद्ध केवल एक ही जाति तक सीमित नहीं होता। प्रताप इस धारणा को गलत मानता था कि युद्ध केवल क्षत्रिय वर्ग ही लड़ सकता है अपितु वह राजस्थान की भील जनजाति को भी युद्ध व सैन्य तकनीक सिखाता था।
- अकबर राणा प्रताप को इसलिए रोकना चाहता था ताकि अन्य राजपूत राजा भी राणा प्रताप से प्रभावित न हो सकें। अकबर ने राजा मान सिंह को राणा प्रताप सिंह के विरूद्ध मुगल सेना का सेनापति नियुक्त किया।

(ख) **युद्धः** प्रताप अपने रणनीतिक लाभ के लिए अपनी पसंद का मैदान चुनना चाहता था। इसका कारण यह था कि उसकी सेना मुगल सेना से छोटी थी। हल्दी घाटी का मैदान न केवल पहाड़ी था अपितु जंगली पेड़-पौधों से घिरा होने के कारण उचित था और अधिक संख्या में कटीली झाड़ियां और पेड़ थे जो आवरण प्रदान करते थे। हार होने की स्थिति में प्रताप की सेना वहां से आसानी से निकल सकती थी। सैन्य शक्ति व युद्ध के लिए संगठन निम्न प्रकार से था-

- मुगल दरबारी इतिहासकार अब्दुल कादिर बदायूंनी के अनुसार प्रताप की सेना में 3000 घुड़सवाार थे। प्रताप के साथ 3000 भील पैदल सेना (जो अच्छे धनुर्धर थे) के अलावा लगभग 3000 से 4000 तक घुड़सवार और कुछ हाथी थे। राणा प्रताप के सेना के पास बंदूकें और मस्कट नहीं थे।

- मुगल सेना में लगभग 16,000 घुड़सवार, 8000 पैदल सैनिक, हाथी सवार तथा बंदूकें थीं। कुल मिलाकर 28,000 सैनिक थे। अकबर की सेना का संगठन बाबर की सेना की तरह ही था।
- मुगल सेना ने अग्रिम पंक्ति में छोटी लड़ाई लड़ने वाली सेना थी जिनका उद्देश्य पिछले पंक्तियों की सेना की रक्षा करना था। शेष सेना को दायीं, बायीं तथा मध्य भाग में विभाजित किया गया था। इनका उद्देश्य दुश्मन की सेना पर दोनों ओर तथा पीछे से आक्रमण करना था।
- प्रताप की छोटी सेना में अग्रिम पंक्ति में कम लोग थे किन्तु दाएं, बाएं तथा मध्य में अधिक थे। प्रताप ने भीलों को दोनों ओर से सेना का बचाव करने हेतु रखा था। यह युद्ध 18 जनवरी, 1576 को हुआ था। प्रताप ने युद्ध शुरु किया किन्तु बराबरी की सेना न होने के कारण वह युद्ध हार गया।

युद्ध के परिणाम

प्रताप की सेना के मुख्य सेनानायक मारे गए। मेवाड़ के खून से हल्दी घाटी की भूमि लाल हो गई। दिल्ली से गुजरात का रास्ता साफ हो गया। अकबर प्रताप को बंदी या युद्ध में मारना चाहता था। किन्तु प्रताप युद्ध मैदान से जीवित बच गया। प्रताप की बहादुरी के चर्चे दूर-दूर तक हो गए। अकबर की दृष्टि से यह विजय खोखली थी क्योंकि प्रताप अकबर के विरूद्ध लगातार संघर्ष करता रहा।

8.4 मुगलों के पतन के कारण

भारत में मुगल शासन के पतन के अनेक कारण थे-

- मुगल सेना के लिए खुला मैदान पहली आवश्यकता थी क्योंकि उसके बिना उनके घुड़सवारों को प्रभावशाली ढंग से तैनात नहीं किया जा सकता था। पहाड़ी क्षेत्र में उनके सामने मुश्किलें थीं।
- किराए की सेना (Mercenaries) होने के कारण उनकी सेना अपने लाभ के लिए कमजोर व अनुशासन हीन हो गयी थी।
- मनसबदारी प्रथा मुगल शासन के लिए आवश्यक थी, किन्तु सेना व्यवस्था के लिए उतनी प्रभावी नहीं थी। प्रत्येक व्यक्ति के पास नुकसान के लिए बहुत कुछ था पर लाभ के लिए बहुत कम। उदाहरण के लिए किसी भी घुड़सवार की युद्ध में मृत्यु होने पर मिलने वाला मुआवजा अनुपातिक दृष्टि से कम था।
- युद्ध में नेतृत्व का अभाव सेना को दिशाहीन बना देता है। अनुशासन व दृढ़ निश्चय के के अभाव में सेना को अचानक लड़ाई का डर सताता रहता है।

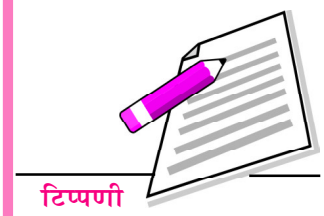

पाठगत प्रश्न 8.2

1. हल्दी घाटी का युद्ध कब लड़ा गया तथा इस युद्ध में एक-दूसरे के विरुद्ध कौन-सी सेनाएं थीं?
2. इस युद्ध का क्या परिणाम निकला?

आपने क्या सीखा

- मनसबदारी व्यवस्था की शुरूआत अकबर ने की थी।
- इस व्यवस्था ने मुगल सैनिकों को दी जाने वाली मानद उपाधियों को सुदृढ़ किया। अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिए अकबर ने पानीपत का दूसरा युद्ध लड़ा जिससे उसकी दिल्ली पर संप्रभुता स्थापित हुई।
- चित्तौड़ की पराजय के बावजूद महाराणा प्रताप सिंह (जो मेवाड़ के महाराजा उदय सिंह के पुत्र थे), ने अकबर की अधीनता आजीवन स्वीकार नहीं की।
- हल्दी घाटी में अकबर की खोखली विजय के बाद प्रताप ने मुगलों के विरुद्ध अपना संघर्ष निरंतर जारी रखा।
- मनसब प्रणाली जो मुगल प्रशासन की मजबूती का स्रोत था वह मुगल सैन्य संगठन के पतन का कारण बनीं।

पाठांत प्रश्न

1. मनसबदारी प्रथा का क्या अभिप्राय है?
2. पानीपत के द्वितीय युद्ध का वर्णन कीजिए।
3. हल्दी घाटी की लड़ाई में मुगलों द्वारा प्रयुक्त सैन्य तकनीक का वर्णन कीजिए।
4. मुगल साम्राज्य के पतन के कारण लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1

1. उपाधियां, वस्त्र और उपहार देकर।
2. अक्टूबर 1556 में
3. अकबर और हेमू की सेना।

8.2

1. जून 1576 में महाराणा प्रताप सिंह और अकबर के मध्य।
2. अकबर ने युद्ध जीता।